मिथिला का कर्नाट वंश

पृष्ठभूमि :- प्रागैतिहासिक काल से भारत के इतिहास में मिथिला या विदेह के शासकों को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। पूर्व मध्यकाल में मिथिला पर कर्नाट वंश का शासन स्थापित हुआ जो ऐतिहासिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। मिथिला के प्राचीन विदेह राज की समाप्ति के लगभग 2500 वर्षों के बाद पुनः मिथिला पर कर्नाटों का स्वतंत्र राज्य स्थापित हुआ। 1097 ई० के लगभग नान्यदेव द्वारा नए वंश कर्नाट की नींव डाली गई।

कर्नाटों की उत्पत्ति :- कर्नाटों की उत्पत्ति के संबंध में इतिहासकारों में काफी मतभेद है कुछ इतिहासकारों का मानना है कि दक्षिण के चालुक्य वंशी शासक विक्रमादित्य VI द्वारा इस क्षेत्र पर आक्रमण के कारण जो लोग यहाँ आए उन लोगों ने ही कर्नाट वंश की स्थापना की। इस वंश का संस्थापक नान्यदेव स्वयं एक सामंत था। नान्यदेव द्वारा स्थापित कर्नाट वंश का शासनकाल को राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से मिथिला का स्वर्णयुग कहा जाता है। इस युग में संगठित राज्य प्रणाली की स्थापना हुई और कला, साहित्य तथा मैथिली भाषा का भी विकास हुआ।

Date ___/___/___
Page ______

— कर्णाट वंश के शासन का अध्ययन इस वंशों के शासकों के शासनकाल के आधार पर किया जा सकता है।

• **नान्यदेव** :– नान्यदेव कर्णाट वंश का संस्थापक था जिसने 1097 ई० मे अपनी सत्ता स्थापित की। नान्यदेव के समकालीन राजनीतिक स्थिति के आधार पर उनकी उपलब्धियों को जाना जा सकता है। उनके समकालीन शासक वंश पाल और गहरवार सेन वंश थे। नान्यदेव ने अपनी राजधानी सिमराँव में स्थापित की थी जो वर्तमान मे नेपाल मे स्थित है। नेपाल के अभिलेखों से नेपाल पर शासन करनेवाले कई कर्णाट शासकों का उल्लेख मिलता है — नान्यदेव, गंगदेव, नरसिंह देव, रामसिंह देव, हरिसिंह देव।

नान्यदेव ने अपने दीर्घ शासनकाल मे पाल कलचुरी, सेन के पारस्परिक संघर्षों के मध्य अपनी कूटनीतिज्ञ और बहादुरी से अपने राज्य को सुरक्षित करने का काम किया। सेनों से मुकाबला करने के लिए नान्यदेव ने गहड़वालों से मैत्रीसंबंध स्थापित किया। विजयसेन के देवपाड़ा अभिलेख से पता चलता है कि विजयसेन और नान्यदेव के मध्य युद्ध मे नान्यदेव की हार हुई थी।

मल्लदेव और गंगदेव :- नान्यदेव के दो पुत्र थे मल्लदेव एवं गंगदेव। मल्लदेव का उल्लेख विद्यापति ने पुरुषपरीक्षा में उल्लेख किए थे। मल्लदेव वीर एवं साहसी व्यक्ति था तथा वह कन्नौज के राजा जयचंद्र के दरबार में भी रह चुका था। ऐसा प्रतीत होता है कि मल्लदेव एवं गंगदेव के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध नहीं था नान्यदेव की मृत्यु के बाद उसका राज्य दो भागों में विभक्त हो गया। जिसमें गंगदेव को सिमराँव का उत्तराधिकार प्राप्त हुआ इसलिए उसे नान्यदेव का उत्तराधिकार कहा जाता है।

गंगदेव एक कुशल शासक था उसने अपने मंत्रियों श्रीधरदास की सहायता से अपने राजनीतिक कार्यों का निर्वहन किया। गंगदेव ने गौड़ पर विजय प्राप्ति के उपलक्ष्य में गौड़ध्वज की उपाधि धारण की। गंगदेव ने बंगाल की सेन शासकों को दक्षिणी बिहार के कई प्रांत छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया। उसके मृत्यु के बाद नरसिंहदेव देव शासक बना।

- नरसिंहदेव के शासनकाल में भारत में तुर्क सत्ता की स्थापना के समकक्ष था। नरसिंहदेव ने बंगाल के शासक गियासुद्दीन से मित्रता कर ली

परंतु बाद मे गयासुद्दीन तुगलक के शासनकाल मे इसे सुल्तान की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

रामसिंहदेव :- यह नरसिंहदेव का उत्तराधिकारी था इसी के शासनकाल मे तिब्बती यात्री धर्मस्वामी मिथिला आया था। धर्मस्वामी के लेखों से ज्ञात होता है कि तात्कालीन मिथिला मुस्लिमो के आक्रमण से आक्रांत थी। रामसिंहदेव के मृत्यु के पश्चात मिथिला की राजनीति मे अशांति अपने चरम सीमा पर थी। इसके उत्तराधिकारी शक्तिसिंह एक निरंकुश शासक था। जिसके कारण लोगो ने इसके पुत्र को (हरिसिंहदेव को सत्ता संभालने के लिए बाध्य कर दिया।

हरिसिंहदेव :- कर्णाट वंश मे नान्यदेव के बाद सबसे प्रतापी राजा हरिसिंहदेव था। इसका शासनकाल (1297-1324) ई० तक था। उसने नेपाल पर आक्रमण कर वहाँ का सत्ता हस्तगत कर उसने कर्णाट शक्ति को पुनः नेपाल तक विस्तार किया। परंतु (1323-24) ई० मे मिथिला पर ग्यासुद्दीन तुगलक ने आक्रमण किया। जिसमे हरिसिंहदेव ने वीरता से शत्रुओं का सामना किया परंतु उसकी हार के साथ मिथिला मे कर्णाट वंश का अंत हो गया।

कर्णाट वंश की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :- मिथिला के इतिहास मे कर्णाट वंश का शासन सांस्कृतिक उपलब्धियो की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। कर्णाट शासक रामसिंहदेव विद्या और धर्म अनुरागी थे। उसके शासनकाल मे वेद की टीकाएँ लिखि गई।

हरिसिंहदेव का शासनकाल सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है इसी के समय मैथिली भाषा की प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर की रचना की गई। इसी के काल मे मिथिला मे पंजीप्रथा का विकास हुआ। कुलीन प्रथा का श्रेय भी मिथिला मे हरिसिंहदेव को दिया जाता है। कर्णाट वंश के शासनकाल मे मिथिला को जानकी / विद्या का केन्द्र होने का गौरव प्राप्त था।

प्रशासनिक उपलब्धि :- कर्णाट वंश के शासको ने अपने राज्य मे अच्छा केंद्रीय एवं स्थानीय प्रशासन की स्थापना की। कर्णाट प्रशासनिक ढाँचा मे राजस्व कर वसूली के लिए राज्य को परगनो मे बाँटा गया था। प्रत्येक परगने मे मुखिया / प्रधान होते थे जिसे चौधरी कहा जाता था, की नियुक्ति होती थी। न्यायिक कार्यो के लिए पंचायत की स्थापना की गई थी। प्रत्येक गाँव मे कोतवाल की नियुक्ति होती थी। रामसिंह के शासनकाल मे पटवारियो की प्रथा आरंभ हुई थी।